Samyak
An Institute For Civil Services

RAS - 23 MAINS TEST SERIES

सिद्धि-II - 013

Time : 3 Hours **Maximum Marks : 200**

हिन्दी - भाग अ, भाग ब, भाग स
Hindi - Part (A, B, C)

Paper - IV

Name :		MARKS	
Enroll. No.:	Part	Attempted Questions	Marks Obtained
Date of Birth :	Part - A	30	$53\frac{3}{4}$
Medium : Hindi	Part - B	8	$30\frac{1}{2}$
E-mail :	Part - C	1	10
Exam Date : 05-05-2024	Total	39	$94\frac{1}{4}$
Invigilator's Signature :			
ECN: RCN:			

अनुदेश (Instructions)

1. परीक्षा शुरू होने से पहले पुस्तिका को जाँच लें।
   Please check the booklet before commencement of the exam.
2. अंक योजना प्रत्येक खंड के प्रारम्भ में दी गई है।
   The marking scheme is given at the start of every section.
3. अभ्यर्थियों को उत्तर निर्धारित शब्द सीमा से अधिक नहीं लिखना चाहिए, इसका उल्लंघन करने पर अंक काटे जा सकते हैं।
   Candidates should not write more than the prescribed word limit in answers, violating this may result in deduction of marks.
4. अभ्यर्थियों को निर्देशित किया जाता है कि किसी भी प्रश्न का उत्तर प्रश्नोत्तर पुस्तिका में निर्धारित स्थान पर ही लिखें। बॉर्डर लाईन से बाहर प्रत्युत्तर नहीं लिखें। बॉर्डर लाईन के बाहर लिखे गये उत्तर को जाँचा नहीं जायेगा।
   Candidates are directed to write answers only in the prescribed space of booklet. They should not write answer outside the border line. Answer written outside the border line will not be checked.

	REVIEW PARAMETERS	SCALE			
		Good	Above Average	Average	Below Average
1.	DOES THE ANSWER ADDRESS THE DEMAND OF THE QUESTION?				
a.	Answer Relevancy				
b.	Answer Enrichment points like use of: · Key Terms/ Subject Vocabulary. Use of Commission/ report/ government publication/ judgements, etc. Association with the Current Affairs and use of examples to explain the concept and idea				
2.	HOW WELL IS THE ANSWER PRESENTED?				
a.	Structure - Intro, Body, Conclusion				
b.	Presentation – Using Subheadings/ points/ highlighting/ flowcharts/ diagrams/ maps				
c.	Language & Grammar				
d.	Word limit				

Detailed Comments / Feedback / Suggestions for Improvement
विस्तृत टिप्पणियाँ/फीडबैक/सुधार के लिए सुझाव

1.

→ सभी प्रश्नों को हल करने का प्रयास करें।

→ अशुद्धियाँ लिखने से बचे।

→ व्याकरण के सुधार की जरूरत।

→ निबंध को प्रस्तावना व निष्कर्ष सही से लिखे।

→ निरंतर अभ्यास करें।

All the best

भाग-अ

1. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए:- $4 \times ½ = 2$

(i) प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा ½

(ii) राजन् + ऋषि = राजर्षि ½

(iii) विधै + अक = विधायक ½

(iv) विद्वत् + वर्ग = विद्वद्वर्ग ½

2. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- $4 \times ½ = 2$

(i) संश्लेषण = सम् + लेसन सम् + श्लेषण 0

(ii) अकिञ्चन = अकिञ् + चन अकिम् + चन 0

(iii) विराडायोजन = विराट् + आयोजन ½

(iv) धूमाच्छादित = धूम + आच्छादित ½

3. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए:- $4 \times ½ = 2$

(i) मूल + छिन्न = मूलच्छिन्न ½

(ii) सत् + उद्योग = सदुद्योग ½

(iii) परि + अवेक्षक = पर्यवेक्षक ½

(iv) ज्योतिः + आदित्य = ज्योतिरादित्य ½

4. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- $4 \times ½ = 2$

(i) अहर्निश = अहन् + निशा ½

(ii) स्वेच्छाचार = सु + इच्छाचार स्वेच्छा + आचार 0

(iii) सौभाग्याकांक्षिणी = सौभाग्य + आकांक्षिणी ½

(iv) वपुष्मान = वपुः + मान ½

5. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- 4×½ = 2

(i) विद्युद्ध्वज = विद्युत् + ध्वज ½

(ii) प्रौद्योगिकी = प्रौद्योग + इक   प्र + औद्योगिकी 0

(iii) हुतासन = हुत + आसन ½

(iv) प्रातस्स्मरण = प्रातः + स्मरण ½

6. निम्नांकित उपसर्गों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- 4×½ = 2

(i) पुनर् = पुनर्निर्माण, पुनरोक्ति ½

(ii) अधः = अधोगति, अधोमुखी ½

(iii) वि = विजन, विनिश्चय ½

(iv) प्रति = प्रत्युपकार, प्रत्यर्पण ½

7. निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) आनुषंगिक = अनु ½

(ii) नैराश्य = निर् ½

(iii) वैधव्य = वि ½

(iv) अभ्युत्थान = अभि + उत् ½

8. निम्नांकित उपसर्गों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- 4×½ = 2

(i) दु = दुरीति, दुर्जन   दुगुना ¼

(ii) उ = ✗ 0

(iii) स्व = स्वनियंत्रण, स्वरोचित, स्वनियमित ½

(iv) क्षमा = 0

9. निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) उन्नासी = उत् उन 0

(ii) प्राक्कथन = प्र प्राक् 0

(iii) लाचार = ला ½

(iv) सहित = स ½

10. निम्नलिखित प्रत्ययों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइयेः- 4×½ = 2

(i) इत = प्रेषित, कल्पित ½

(ii) आड़ी = अनाड़ी, खिलाड़ी ½

(iii) इष्णु = सहिष्णु + ½

(iv) हरा = सुनहरा, दशहरा ½

11. निम्नांकित शब्दों में से प्रत्यय पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) हरीतिमा = हरीत + इमा (हरित) ½

(ii) औद्योगिकी = इक (उद्योग + इक) + ई ¼

(iii) मनसिज = मनस + अ मनस + ज 0

(iv) कब्रिस्तान = ~~कब्र + इस्तान~~ कब्र + स्थान कब्र + इस्तान 0

12. निम्नलिखित प्रत्ययों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइयेः- 4×½ = 2

(i) इश = कपिश, ¼

(ii) ईन = कुलीन, ¼

(iii) कर = सुकर, दुष्कर ½

(iv) ड़ा = बगड़ा, चमड़ा ½

13. निम्नांकित शब्दों में से प्रत्यय पृथक् कीजिए- 4×½=2

(i) तेलंगाना = तेलंग + आना ½

(ii) आरण्यक = अरण्य + इक अक 0

(iii) लड़का = आका आ

(iv) ध्यातव्य = ध्यात + य ध्या + तव्य 0

14. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½=2

(i) तिरोभाव =

(ii) अंबर = पृथ्वी अवनि 0

(iii) अर्वाचीन = प्राचीन ½

(iv) सदय = असदय क्रूर 0

15. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½=2

(i) आह्लाद = हर्ष विषाद 0

(ii) अलम् = इति ईषत /कम 0

(iii) पराभव = स्वभव विभव 0

(iv) मसृण = रूक्ष ½

16. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½=2

(i) सुघड़ = फूहड ½

(ii) विश्लिष्ट = संश्लिष्ट ½

(iii) क्षणिक = शाश्वत ½

(iv) आवाहन = विसर्जन ½

17. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 1×½ = 2

(i) शठ = सज्जन

(ii) ह्रास = प्रचुरता वृद्धि

(iii) ज्योत्स्ना = तमिस्रा

(iv) स्थापन = उन्मूलन

18. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पयार्यवाची लिखिए:- 4×1 = 4

(i) अश्रु = नयननीर, आँसु

(ii) खान = खदान, खनन स्थल → आगार, भण्डार

(iii) क्षणभंगुर = नश्वर, अशाश्वत, क्षणिक अचिर, अल्पजीवी

(iv) बेशुमार = अत्यधिक, अधिक, प्रचुरता

19. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पयार्यवाची लिखिए:- 4×1 = 4

(i) क्षीर =

(ii) कूज = पक्षी, खग, पखेरू आवाज, ध्वनि

(iii) महीधर = समुद्र, जलधि पहाड, शैल

(iv) अरुणोदय = सूर्योदय, भानुदय

20. निम्नांकित शब्द-युग्मों का अर्थ भेद लिखिए:- 4×1 = 4

(i) खरा-खर्रा = विशुद्ध - लेखा चिट्ठा

(ii) स्वजन-श्वजन = स्वयं का - कुत्ता

(iii) शांति-श्रांति =

(iv) हरिण-हरिण्य = मृग - सोना

21. निम्नलिखित शब्द-युग्मों का अर्थ भेद लिखिए:- 4×1 = 4

(i) सागर-साग़र = रत्नाकर - समुद्र

(ii) षष्टि-षष्ठी = एक राग - साठ की संख्या / 60 वर्ष - छठी

(iii) पावस-पायस = वर्षा - खीर

(iv) प्रत्युपकार-प्रत्यपकार = उपकार के बदले उपकार - जिस पर उपकार किया हो उपकार / अपकार के बदले अपकार

22. निम्नांकित वाक्यांशों के लिए सार्थक शब्द लिखिए:- 4×1 = 4

(i) किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया यथातथ्य वर्णन = इतिहास / इतिवृत्त

(ii) शीघ्रता का अभाव = अत्वरा

(iii) घर के सबसे ऊपर के खण्ड की कोठरी = अटारी

(iv) मोक्ष की इच्छा रखने वाला = मुमुक्षु

23. निम्नांकित वाक्यांशों के लिए सार्थक शब्द लिखिए:- 4×1 = 4

(i) सुख और दुःख में समान रहने वाला = मनस्वी

(ii) किसी कार्य में लीन/लगा हुआ = व्याप्त

(iii) जो खाना सदैव मुफ्त में दिया जाता है = सदावर्त

(iv) जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ हो = शिलष्ट 1

24. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए- 8×1 = 8

(i) किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखो। टिप्पणियाँ
किन्ही दो पर टिप्पणी कीजिए। 0

(ii) मौर्यकालीन समय में लोग सुखी थे।
मौर्यकाल मे लोग सुखी थे 1

(iii) आपने बड़ी ऊँची कोटि की कहानी सुनाई।
आपने बड़ी उच्च कोटि की कहानी सुनाई। 1

(iv) उसने हमारे नाक में दम कर दिया।
उसने मेरे नाक मे दम कर रखा है दिया 0
हमारी नाक में

(v) उसने मेरे को खाना खिलाया।
उसने मुझे खाना खिलाया। 1

(vi) वह सारी रातभर जागता रहा।
वह रातभर / सारी रात जागता रहा 1

(vii) उज्जवल चरित्र के लिए मानसिक दृढ़ता आवश्यक है।
उज्ज्वल श्रेष्ठ चरित्र के लिए मानसिक दृढ़ता आवश्यक है 0

(viii) तेरी बात सुनते-सुनते कान पक गये।
तेरी बातें सुन-सुन कर कान पक गये। 0
तुम्हारी

4×1 = 4

25. निम्नांकित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए:-

(i) आल्हाद = आह्लाद 1

(ii) मिष्टान = मिष्ठान्न 1

(iii) केलाश = कैलाश केलास 0

(iv) प्रमाणिक = प्रामाणिक 1

4×1 = 4

26. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए:-

(i) प्रत्युत् = प्रत्युष प्रत्युत 0

(ii) चन्द्रमोली = ~~चन्द्रमौली~~ चन्द्रमौलि 1

(iii) किंववंदति = किंवदंति 1

(iv) प्रत्यवर्तन = प्रत्यावर्तन 1

4×2 = 8

27. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में सार्थक प्रयोग कीजिए:-

(i) तीन तेरह करना - ~~गायब करना~~ ~~खाली करना~~ छिन भिन्न करना।

ज्यादा इधर उधर की तीन तेरह नहीं करनी चाहिए क्योंकि मगर हम किसी के साथ ऐसा करते है तो हमारे साथ भी ऐसा हो सकता है।

(ii) शैतान के कान कतरना - ~~बहुत चालाक होना।~~ → अत्यधिक शैतानी करना।

शेयर बाजार में सभी को नुकसान हुआ पर रमेश फिर भी कमा गया। उसको नुकसान करना शैतान के कान कतरने समान है।

(iii) जहाज का काग होना - असाध्य वस्तु, एकमात्र ठिकाना

बेरोजगारों के लिए सरकारी नौकरी अब जहाज के काग समान होती जा रही है।

उचित समय बीत जाने पर इच्छा जागना।

(iv) बासी कढ़ी में उबाल आना - कमजोर द्वारा भी शक्ति प्रदर्शन

प्रशासन में अपने बेटे के कार्यग्रहण करते ही मनोज बड़े-बड़े लोगों को भी धमकियां देने लग गया है यह तो ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार बासी कढी में उबाल आना।

28. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में सार्थक प्रयोग कीजिए:- 4×2 = 8

(i) आई तो रोजी नहीं तो रोजा-

(ii) खेती, खसम लेती है-

(iii) डायन को दामाद प्यारा- (अपने सभी को अच्छे लगते है।
रमेश के माता-पिता उसकी गलत हरकतों पर भी उसे कुछ नहीं कहते है सही कहा गया है डायन को भी दामाद प्यार होता है।
2

(iv) लेना एक न देना दो- किसी से कोई मतलब नहीं।
जब मनोज से पड़ोसियों के झगड़े के बारें में पूछा गया तो उन्होंने एक टूक जवाब दिया, मेरा तो इससे न लेना एक न देना दो, मुझे कुछ पता नहीं है।
2

29. निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी पारिभाषिक लिखिए- 5×1 = 5

(i) ABATE –
0

(ii) NOURISH –
0

(iii) QUALIFIED SUPPORT –
0

(iv) REPUGNANT –
0

(v) CERTIFY – निश्चित्ता प्रमाणित करना।

30. निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी पारिभाषिक लिखिए– 5×1 = 5

(i) OFFICIATING – स्थानापन्न (1)

(ii) STIPEND – शोधवृत्ति वजीफा, छात्रवृत्ति (0)

(iii) UNTENABLE –

(0)

(iv) CASUAL DRESS – साधारण वेशभूषा औपचारिक वेशभूषा

(v) DEARNESS RELIEF –

दैनिक राहत महंगाई राहत (0)

भाग-ब

1. **निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए एक-तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए।** अंक-10

ध्यान कर्म का निषेध नहीं है, अपितु पूर्ण और शुद्ध कर्म का आधार है। ध्यान को ठीक से न समझने वाले लोग ही ध्यान को कर्म का निषेध समझ बैठते हैं। ध्यान और कर्म वैसे ही हैं, जैसे रस्सी का कुएँ के भीतर जाना और बाहर आना या हृदय का सिकुड़ना और फैलना। ध्यान स्वयं को जानने का साधन है और कर्म स्वयं को बाँटने का। स्वयं को जानना आत्म-ज्ञान है और स्वयं को बाँटना प्रेम है। आत्म-ज्ञान से बुद्धि को ठीक निर्णय देने के लिए सत्य का आधार उपलब्ध होता है तो प्रेम से हृदय का विकास सम्भव हो पाता है, व्यक्तित्व की अखंडता और एकता के लिए बुद्धि और हृदय दोनों का समुचित विकास आवश्यक है। ध्यान का लक्ष्य विरोधात्मक वृत्तियों का समन्वय करके अंतर को प्रकाशित करना है और कर्म उस अन्तः ज्योति से बहने वाली करुणा और आनंद है।

* ध्यान व कर्म मे अन्तर्संबंध *

दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। ध्यान स्व का परिचायक है।

ध्यान कर्म का आधार है। ध्यान स्वयं को जानने अर्थात आत्म ज्ञान का माध्यम है वहीं कर्म प्रेम है। आत्मज्ञान सत्य पर टीका है तथा प्रेम हृदय के विकास में सहायक है। इन दोनों से अखंडता का विकास होता है। ध्यान समन्वय करता है तो कर्म सुख और दुख में सामंजस्य स्थापित करता है।

(कुल शब्द - 60)

(अवतरण शब्द = 175)

5

2. निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए एक-तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए। अंक-10

"आज देश स्वतंत्र है। हमें अपनी शक्ति की वृद्धि करनी है, जिससे हमारी नवीन स्वतंत्रता की रक्षा हो सके। आए दिन ऐसे संकट हमको चुनौती देते रहते हैं जिनसे निपटने के लिए एक शक्तिशाली सेना की आवश्यकता है। यदि विद्यालयों में ही देश-सेवा की यह भावना दृढ़ हो जाए तो भविष्य के लिए बहुत बड़ी तैयारी हो सकेगी। प्राचीनकाल में आश्रमों वेद-शास्त्रों के साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। द्रोणाचार्य ने कौरवों-पाण्डवों को सैनिक शिक्षा दी थी। सैनिक शिक्षा से शारीरिक शक्ति के साथ मानवीय गुणों का भी विकास होता है। सेवा, तत्परता, परिश्रमशीलता, निर्भयता आदि गुण इस शिक्षा से अपने आप आ जाते हैं। जीवन भी तो एक युद्धक्षेत्र ही है। इस क्षेत्र में लड़ने के लिए भी उपर्युक्त गुणों की आवश्यकता पड़ती है। हमारे देश की संस्कृति शांति प्रधान है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी शक्ति में वृद्धि न करें। आज सम्पूर्ण संसार सैनिक शिक्षा पर जो ध्यान दे रहा है उसे देखते हुए हमारे लिए भी इस ओर कदम बढ़ाना आवश्यक हो जाता है।"

शक्ति की महत्ता व आवश्यकता

अनिवार्य सैनिक शिक्षा।

स्वतंत्रता की रक्षा हेतु शक्ति महत्वपूर्ण है। इसकी शुरुआत विद्यालय से ही करनी चाहिए जैसा प्राचीनकाल के आश्रमों में किया जाता था जहां अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी जाती थी। इससे बहुआयामी विकास होता है। सेवा, डर का अभाव इसी से संभव है। शांति हेतु भी शक्ति आवश्यक है। विश्वानुसार हमें भी इसमें वृद्धि करनी चाहिए। शांति और सुरक्षा की दृष्टि से यह कदम उठाना अनिवार्य हो जाता है।

(अवतरण कुल शब्द लगभग -190)

अवतरण को पढ़कर उसका भाव समझे फिर शीर्षक लिखे।

(संक्षिप्तीकरण कुल शब्द लगभग = 63)

2-3 लाईन में अवतरण का भाव लिखने का प्रयास करें।

3. निम्नलिखित का भाव विस्तार कीजिए- अंक-10

शीर्षक- स्वर्ग की गुलामी से नरक का स्वराज श्रेयस्कर माना गया है।

उपर्युक्त पंक्ति का आशय है कि हमें दासता कभी भी स्वीकार नहीं करनी चाहिए। यह मनुष्य की परम शत्रु है। हमें दासता की पेड़ियों बेड़ियों को तोड़कर स्वतंत्रता के मार्ग की ओर प्रशस्त होना चाहिए।

जिस प्रकार एक सोने के पिंजरे मे कैद पक्षी से स्वतंत्र आकाश में विचरण करने वाला पक्षी अधिक सुःखी होता है उसी प्रकार स्वर्ग की गुलामी से नरक का स्वराज बढ़कर होता है।

1/4

यहाँ स्वराज से आशय स्वयं के इच्छाओं द्वारा, अर्थात व्यक्तिगत स्वतंत्रता। गाँधी, तिलक, सुभाष चंद्र बोस भी स्वराज के पक्षकर थे। तिलक ने कहा था- "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है मैं इसे लेकर रहूँगा।" भारतीय आजादी की लड़ाई स्वराज को लेकर ही लड़ी गई थी।

व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास, सभी पक्षो के समायोजन, योग्यताओं के पूर्ण सदुपयोग हेतु स्वराज आवश्यक है। स्वराज स्वतंत्रता का पक्षधर है या स्वतंत्रता इसका अभिन्न हिस्सा है। अतः कहा जा सकता है की कि स्वराज व स्वतंत्रता एक दूसरे के पूरक है।

इतिहास में स्वतंत्रता को लेकर अनेकों लड़ाई लड़ी गई हैं तथा अधिकारों हेतु विभिन्न व्यक्तियों ने बलिदान दिया है स्वराज की माँग को लेकर हो रहे आंदोलन में जब लाला लाजपत राय घायल हो गये थे तो मृत्यु से पहले उन्होंने कहा था "मेरे शरीर में पड़ी एक-एक ~~कील~~ लाठी "अंग्रेजी साम्राज्य में ताबूत के कील समान होगी"।

15 अगस्त को इन्हीं आंदोलनों से भारत ने स्वराज की प्राप्ति की थी तथा दासता रूपी बेड़ियों को तोड़ा था। महिलाओं को भी अपने अधिकारों हेतु लड़ाई लड़नी चाहिए संविधान में समानता का अधिकार दिया गया है परंतु अभी भी बहुत क्षेत्र बाकी हैं जहाँ इसे पूर्णतः लागू किया जाना है। अतः उनको भी दासता रूपी इस गुलामी को हटाकर स्वतंत्रता व स्वराज के इस पेड़ को उन्मूलित करना होगा।
प्रफुल्लित

स्वतन्त्रता → आत्मविकास का एकमात्र साधन।
→ अधिक श्रेयस्कर
→ मानव की एक निजी अलग पहचान
→ मानव की सर्वोपरि धर्म

शब्द सीमा पूरी करें

4. निम्नलिखित का भाव विस्तार कीजिए- अंक-10

शीर्षक- ज्ञान-विज्ञान से मनुष्य की अभिवृद्धि हो सकती है, विकास नहीं हो सकता।

विकास अनुभवों की श्रृंखला है जो अभ्यास व परिस्थितियों का दृढ़ता पूर्वक सामना करने से संभव है। ज्ञान व विज्ञान मनुष्य की अभिवृत्ति में वृद्धि कर सकते है परंतु विकास एक बहुआयामी अवधारणा है। जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक पक्ष शामिल है।

"करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान"

अर्थात् कर्मो के कुशल अभ्यास से ही व्यक्तित्व का विकास संभव है। ज्ञान केवल बौद्धिक स्तर में वृद्धि करता है परंतु विकास हेतु व्यवहारिक पक्ष भी आवश्यक है।

असफलताएँ हमारे विकास का आधार तय करती है वह हमारे व्यक्तित्व को दृढ़ बनाकर, मुश्किल चुनौतियों हेतु निपटने का रास्ता प्रशस्त करती है जो एक तरह का व्यक्तित्व का विकास है। अंग्रेजी की कहावत "failure are just a champion" इसकी समानार्थी है अर्थात असफलता सफलता के लिए ईंधन (ऊर्जा) का कार्य करती है।

ज्ञान को विकास में बदलने के लिए इसका व्यवहार-

में उपयोग आवश्यक है। विज्ञान व ज्ञान से प्राप्त सूचना को व्यक्ति जब अपने व्यवहार में परिलक्षित करता है तो विकास संभव हो जाता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक भी इसी बात पर बल देते है की असली ज्ञान वही है जो हमारे व्यवहार में परिलक्षित होता हो।

योग के माध्यम से ज्ञान को विकास में परिवर्तित किया जा सकता है योग हमारे लिए विभिन्न पहलुओं को जोड़ने का कार्य करता है, कर्मो में कुशलता लाता है।

विज्ञान
- मनुष्य के दैवत्व प्रियस्वभाव का दमन।
- बुद्धि का अहंकार।
- सरल, सुंदर, उच्च आदर्शों से विश्वास का उठना।
- द्वन्द्व, संघर्ष, वाद-विवाद, ईर्ष्या, कलह से पूर्ण।
- जड़ता से चैतन्य की ओर।
- विकास का अवरुद्ध।

शब्द सीमा पूरी करें।

भाव विस्तार को प्रभावी बनाये।

5. निम्नांकित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। अंक-10

Although art and morality have been integral parts of society, there has always been a difference of opinion on some issues or topics. Art has often adopted and reflected offbeat behavior and attitudes. In many cases this practice of art has proved to be revolutionary. On the contrary, morality has been more tradition-based. Morality has set standards of good behavior based on social likes and dislikes in almost all areas. As a result, we have to face ethical norms at many levels, such as political ethics, business ethics, cultural ethics etc. But most emphasis is given on sexual morality. Not only this, everyone in the society is expected to know, understand and follow these codes of ethics and acceptance and taboos very well.

यद्यपि कला व नैतिकता समाज का अभिन्न हिस्सा है। कुछ मुद्दों पर हमेशा मतविभिन्नय (विभिन्न) रहता है। कला हमारे व्यवहार व अभिव्यक्तियों को अक्सर स्वीकार करती है। बहुत से केसों में कला का अभ्यास क्रांतिकारी सिद्ध हुआ है। विपरितार्थ मे, नैतिकता अधिक नवीन आधारित है। नैतिकता ने सभी क्षेत्रों में सामाजिक पसंद व नापसंद के विभिन्न आधार प्रस्तुत / निर्धारित किये है। फ्यूलर में, हमें विभिन्न स्तरों पर नैतिक दुविधा का सामना करना पड़ता है। जैसे राजनैतिक, व्यवसायिक, सांस्कृतिक नैतिकता पर अधिक जोर लैंगिक नैतिकता पर दिया जा रहा है। केवल यही नहीं, समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस नैतिक संहिता को जानने, समझने व पूरा करने का प्रयास करता है तथा इसे स्वीकारता है।

6/10

निम्नांकित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए।

6. Science and art are fundamentally two mediums of knowledge, but in the present world they have developed as two subjects of study and thus their relative importance has decreased. At the level of thinking, science and art complement each other and it seems that it is impossible to expand the influence of one without the other. But, at the practical level, some fundamental differences between the two subjects are also visible. Art is subjective whereas science is mainly dependent on interest. Science works on the basis of collection of facts, its integration and finally general conclusions. That is, it is necessary to have cause and effect. On the other hand, art is based on imagination, feelings and emotions. Therefore, it is definitely necessary to find the solution to the given question. अंक- 10

विज्ञान व कला ज्ञान के दो मूलभूत माध्यम है। परंतु वर्तमान विश्व मे, इनको दो ~~विषय~~ पढने के विषय के रूप मे ~~कि~~ विकसित किया जा चुका है इससे ~~इन~~ उनके पारस्परिक महत्ता घटी है। सोचने के स्तर पर, विज्ञान व कला एक दूसरे के पूरक है। कुछ मूलभूत अंतर भी इन्हे दोनों विषयों मे दृश्यत होता है। कला वस्तुनिष्ठ है वही विज्ञान मुख्यत: रूचि पर आधारित है। विज्ञान आँकड़ो के संकलन, समन्वय व सामान्य निष्कर्ष पर कार्य करता है, यही कारण है कि कारण व प्रभाव जरूरी है। वही दूसरी तरफ, कला विचार, भावना, करुणा पर आधारित है यही कारण है कि यह जरूरी रूप से अनिवार्य है कि दिए गए प्रश्न का उत्तर निकाले।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक ~~के~~ बिना दूसरे का प्रभाव, व्यावहारिक स्तर पर ~~बाह्य~~ रूप से दोनों विषयों मे कुछ मूलभूत अंतर भी दृष्टिगोचर होते है।

4½

लाईन टू लाईन अनुवाद करें।
अभ्यास करें।

7. नगरीय विकास एवं स्वायत शासन विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा स्वायत शासन विभाग में कार्यरत समस्त सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवायें तुरन्त प्रभाव से समाप्त किये जाने के बावत कार्यालयी आदेश जारी किये जाने के लिए कार्यालयी आदेश का प्रारूप लिखिए।

अंक-10

राजस्थान सरकार

कार्यालय, नगरीय विकास व स्वायत शासन विभाग।

प.क्र.:- एफ(प)/न.वि.स्वा.शा.वि./2024/18।   05 मई, 2024

कार्यालयी आदेश

समस्त सेवानिवृत्त कर्मचारी

स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर।

विषय:- सेवाएं तत्काल प्रभाव से समाप्ती हेतु।

उपरोक्त विषयान्तर्गत नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग के अधीनस्थ समस्त संस्थाओं, निकायों, एवं कार्यालयो में सेवानिवृत्ति उपरान्त समेकित पारिश्रमिक/संविदा पेंशन अथवा अन्य किसी भी माध्यम से कार्यरत समस्त सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवायें तुरन्त प्रभाव से समाप्त की जाती है।

प्रतिलिपि

—

—

क.ख.ग

निदेशक एवं संयुक्त सचिव

अभ्यास करें।
प्रारूप बनाने का अभ्यास करें।

भाग- स

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए- अंक-20

1. ई-शासन भ्रष्टाचार का शत्रु है।
2. वैश्वीकरण बनाम संरक्षणवाद

ई-शासन भ्रष्टाचार का शत्रु है

ई-शासन से तात्पर्य शासन, प्रशासन में सूचना प्रौद्योगिकी व तकनीकी के उपयोग से है। सूचना तकनीकि की विभिन्न युक्तियों का प्रयोग प्रशासन में करना ई-शासन कहलाता है। आज पूरे विश्व के अनुरूप भारत भी इसे अपना रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 ई-शासन को कानूनी आधार प्रदान करता है जिस ई-डस्तावेज, ई-साईन, ई-साक्ष्यों को कानूनी मान्यता प्रदान की गई है। डिजिटल इंडिया मिशन 2015 इसमें कारगर साबित हुआ है जिसमें विभिन्न मिशन मोड परियोजनाओं शामिल है यथा ई-साईन, डीजीलॉकर, ई जिला आदि।

आजादी को 72 वर्ष पूरे हो चुके है ना जाने गंगा मे कितना पानी बह चुका है परंतु भ्रष्टाचार आज भी सीना तान के भारतीयों की छाती पर मूँग दल रहा है हमारे अथक प्रयासो या कहें कागजी प्रयासों के बावजूद आज भ्रष्टाचार हमारी मूलभूत समस्या बन गया है। समाज में इसे

स्वीकार्यता मिलना तथा इसके "स्पीड मनी" के रूप में उपयोग ने इसे और अधिक विकराल बना दिया है।

भ्रष्टाचार प्रशासन में "दीमक" की तरह है जो इसे लगातार खोखला बना रहा है। इसके उन्मूलन में ई-शासन रामबाण साबित हो सकता है। इसके प्रयोग से पारदर्शिता, जनसहभागिकता में वृद्धि होती है जो जवाबदेहिता का निर्धारण करता है तथा भ्रष्टाचार कम करता है।

हालांकि इसको भी पूर्णतः लागू करने में कुछ समस्याएँ यथा संसाधनों का अभाव, आधारभूत ढांचे का अभाव, प्रशिक्षण की कमी, तकनीकी ज्ञान की अनुपलब्धता, साक्षरता दर का ह्रास प्रमुख है। सरकार को इन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

ई-शासन के प्रयोग से भारी भ्रष्टाचार में कमी आयेगी तथा 2G स्पेक्ट्रम, कॉमनवेल्थ, हर्षद मेहता जैसे बड़े घोटालों को कम करने में सहायता मिलेगी। संसाधनों की प्रचुरता उपलब्धता, तकनीकी ज्ञान विस्तार, शिक्षा व प्रशिक्षण द्वारा इसे बढ़ाया जा सकता है।

हालांकि इन सब के बावजूद भी ई-शासन तो केवल एक पक्ष मात्र है भ्रष्टाचार के अनेकों रूप व कारण हैं जिन्ह पर कठोराघात के बिना इसका उन्मूलन आसमान से तारे तोड़ने समान प्रतीत होता है।

अधिकारों के प्रति समझ, प्रस्तावना का संपूर्ण ज्ञान, जनजागरूकता के माध्यम से इसमें कमी लाई जा सकती है। जस्टिस N.V रमन्ना के शब्दों में :- "भ्रष्टाचार के अभाव में, हमारा देश धरती पर स्वर्ग की भांति प्रतित होगा। अतः हमें इस औपनिवेशिक विरासत को जड़ से समाप्त करना चाहिए।

प्रतीत

- सार्वजनिक सेवा प्रदान करने में I.T.C. का प्रयोग।
- उदारीकरण के बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था।
- ई-मित्र, ई-आधार, ई-टिकटिंग, भूमि, ई-टैक्स जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से जनता की सीधी पहुंच।
- विभिन्न डिलिवरी मॉडल सरकार से उपभोक्ता तक सुगमता से पहुंच।
- E-प्रोक्यूरमेंट, E-बिडिंग, E-बिलिंग, ई-पेमेंट एवं अन्य आई.टी. सेवाओं को अपनाने पर बल।

शब्द सीमा पूरी करे
विभिन्न दृष्टिकोण का समावेश कर निबंध को प्रभावी बनाये।